ज्ञान की उदाहरणात्मक बातें

अपने उपदेशों के समय श्री महाराज जी तरह-तरह के उदाहरण दिया करते थे। उन्हीं में से कुछ हम आपके सामने रखने का प्रयास कर रहे हैं। कृपया इन बातों को ध्यान में रखकर ही अपना जीवन जीयें। परंतु ध्यान रखें कि निषिद्ध कर्मों को इन उदाहरणों का सहारा लेकर किसी तरह भी न्यायोचित नहीं कहा जा सकता। तो आइये देखते हैं कुछ उदाहरण।

(१) जैसे बालू में बच्चों द्वारा बनायी गयी विभिन्न आकृतियों का मूल बालू ही है और इन आकृतियों के नष्ट होने से ये पुनः बालू ही हो जाती है। ऐसे ही ये पूरा दृश्य संसार ब्रह्म से उत्पन्न होकर, ब्रह्म में रहकर, ब्रह्म ही में लीन हो जाता है।

(२) जिस प्रकार सोने से बने आभूषणों का मूल सोना ही है, तथा मिटने के उपरांत ये सभी आभूषण सोना ही बन जाते हैं। ऐसे ही इस जगत के चल-अचल सभी जीव ब्रह्म से ही बने हैं, तथा समाप्त होने पर ब्रह्म ही में लीन हो जाते हैं।

(३) जिस प्रकार मिट्टी से बने बर्तन, मिट्टी से बने होने पर भी, अपने विभिन्न नामों से ही जाने जाते हैं। परंतु अंत में मिट्टी में ही लीन हो जाते हैं। इसी प्रकार इस संसार में सभी चल-अचल जीव ब्रह्म से बने होकर भी, अपने विभिन्न नामों, जातियों तथा धर्मों से ही जाने जाते हैं। परंतु अंत में ब्रह्म ही में लीन हो जाते हैं।

(४) जैसे जल ही का परिवर्तित रूप हिम, धुंध तथा हिमपात है और ये सभी पुनः जल ही में मिल जाते हैं। ऐसे ही ब्रह्म का परिवर्तित रूप यह सारा संसार है और ब्रह्म ही नानाविध जगत में व्याप्त हो रहा है। समाप्त होने पर यह संसार पुनः ब्रह्म ही में मिल जाता है।

(५) जैसे चीनी अथवा खांड से बने खिलोने (दीपावली के शुभ अवसर पर बनने वाला एक प्रकार का मिष्ठान) जिनमें हाथी, घोड़े, गाय आदि जीव-जंतु तो भ्रम मात्र ही होते हैं और अस्तित्व तो केवल चीनी का ही होता है। ऐसे ही इस दृश्य संसार में प्रतीत होने वाले सभी चल-अचल प्राणी और वस्तुऐं भ्रम मात्र ही है और अस्तित्व तो केवल ब्रह्म का ही है जिससे यह सारी सृष्टि उत्पन्न हुई है।

(६) जिस प्रकार गंगाजल में अथवा चांडाल के जल में प्रतिबिंबित सूर्य में कोई अंतर नहीं है। ऐसे ही भिन्न-भिन्न मनुष्यों की आत्मा में भी कोई अंतर नहीं है।

(७) जिस प्रकार सोने के घड़े में अथवा मिट्टी के घड़े में उपस्थित आकाश (हवा) में कोई अंतर नहीं है। ऐसे ही भिन्न-भिन्न मनुष्यों में उपस्थित आत्मा में भी कोई अंतर नहीं है।

(८) जिस प्रकार गंदे दर्पण से गंदगी मिट जाने से सूर्य साफ प्रतिबिंबित होता है। ऐसे ही आत्मा से अज्ञान रूपी गंदगी मिट जाने से परमात्मा साफ प्रतिबिंबित होता है।

(९) जिस प्रकार अज्ञानतावश रज्जू (रस्सी) में सर्प का अभास होता है, और उस अज्ञानता के मिट जाने से रज्जू की ही सत्ता दिखती है। ऐसे ही अज्ञानता के मिट जाने पर इस संसार में भी ब्रह्म की ही सत्ता का ज्ञान होता है।

(१०) जिस प्रकार समुद्र में उठने वाली लहरें अलग–अलग दिखती हैं, परंतु उनमें एक ही समुद्र होता है। ऐसे ही विभिन्न मनुष्य ब्रह्मरूपी समुद्र की लहरें ही हैं। तथा जैसे समुद्र में उठने वाली लहरें असत हैं, और सत तो समुद्र ही है। ऐसे ही यह संसार जो नानाविध दृष्टि गोचर हो रहा है उस ब्रह्मरूपी समुद्र की लहर ही है। इसी कारण असत है, सत तो केवल ब्रह्म ही है।

बोलो प्रेम से सचिदानंद सनातन ब्रह्म की जय